E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2020; 2(3): 799-801
Received: 05-05-2020
Accepted: 08-06-2020

अनुज कुमार
शोध छात्र, महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार, भारत

Corresponding Author:
अनुज कुमार
शोध छात्र, महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार, भारत

उपमा कालिदासस्य

अनुज कुमार

प्रस्तावना

उपमा अलङ्कार के प्रयोग में कालिदास के विशिष्टता के कारण लोकोक्ति चल पड़ी है उपमा कालिदासस्य। उनकी अभिव्यक्ति शृङ्गार के रूप में उपमाए यत्र तत्र विन्यस्त है। उपमा का उद्देश्य है कवि की कल्पना के नेत्र के समक्ष विद्यमान वस्तुस्थिति को पाठकों के लिए सुगम बनाना कवि के लिए जो बस्तुस्थिति परिचित है वह पाठकों को अपरिचित है। अतएव पाठकों के लिए सामान्य रूप से सुगम विषयों को लाकर कवि अपने लक्ष्य की पूर्ति मे सफल होता है। पाठक उन विषयों से कवि द्वारा प्रस्तुत विषयो की कल्पना कर लेते है। कालिदास ने सर्वाधिक प्रयोग इसी अलङ्कार का किया है। उपमा के साथ साथ सादृश्यमुलक सभी अलङ्कारों का ग्रहण हो जाता है। जिनमें अप्रस्तुत विषय की योजना होती है। यह कवि प्रयुक्त कुछ उपमाओं का उक्त महाकाव्य के सन्दर्भ में अवलोकन कर सकते है।

इन्दुमती के स्वयंवर में नृपगण आसन जमाये हैं। बड़ी आशा लगाये हुए हैं कि स्यात् अनिन्द्य सुन्दरी इन्दुमती उन्हें वरण कर ले, उनका भाग्य जाग उठे। किन्तु इन्दुमती जिस – जिस नृप को बिना वरण किये ही छोड़कर निकल जाती है, वह नृप उसी प्रकार म्लान हो जाता है जैसे रात्रि के घोर अन्धकार में राजमार्ग पर स्थित भवन को दीपशिखा (दीपक की ला) छोड़कर आगे बढ़ जाती है (और वह भवन अन्धकार में लीन होकर काला पड़ जाता है।) दीपशिखा के हटते ही त्वरित भवन के काले होने के समान राजाओं के पास से इन्दुमती के हट जाने पर राजाओं के म्लान होने की कल्पना महाकवि के अतिरिक्त और किसको सूझ सकती है ?

सञ्चारिणी दीपशिखेव रात्रौ यं यं व्यतीयाय पतिंवरा सा।
नरेन्द्रमार्गाट्ट इव प्रपेदे विवर्णभावं स स भूमिपालः॥ [1]

अङ्गनाओं का हृदय कुसुम के समान होता है। कितना अधिक औचित्य है यहाँ। कुसुम होता है सुरभिपरिपूर्ण एवं कोमल और अङ्गनाहृदय भी भावपरिपूर्ण एवं कोमल होता है, विशेषतः वियोगावस्था में

आशावन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानां।
सद्यः पाति प्रणयिहृदयं विप्रयोगे रुणद्धि॥ [2]

प्रिय पत्नी इन्दुमती को विधाता ने अज से सदा के लिए वियुक्त कर दिया। उनके लिये संसार सूना हो गया और जीना दूभर। वसिष्ठ ने बहुतेरा समझाया। पुत्र दशरथ अल्पवयस्क होने के कारण राज्यभारधारण करने में समर्थ नहीं था। अतः अज को राज्य कार्य देखना ही था। किन्तु प्रियाविरह से दुःख ने अज के हृदय को वैसे ही विदीर्ण कर दिया जैसे विशाल महल के समीप उगा प्लक्ष वृक्ष अपनी जड़ों से उस महल को उखाड़ फेकता है। भवन को उखाड़ फेकने का कार्य जडें

धरती के भीतर ही भीतर किया करती हैं और इन्दुमती के वियोग का दुःख भी अज के हृदय को भीतर ही भीतर विदीर्ण कर रहा था।

शकुन्तला को छोड़कर चलते हुए आकृष्ट दुष्यन्त की दशा कैसी हो रही है ? देखिये, दुष्यन्त कहता है

'गच्छति पुरः शरीरं धावति पश्चादसंस्तुतं चेतः।
चीनांशुकमिव केतोः प्रतिवातं नीयमानस्य॥ [3]

अर्थात् जब मैं चलता हूँ तब मेरा शरीर तो आगे चलता है लेकिन मेरा अपरिचित (जैसा) मन पीछे भागता है, ठीक वैसे ही जैसे वायु की विरुद्ध दिशा में ले जाये जाते हुए पताके में लगा हुआ चीन देश का बना रेशमी वस्त्र। यहाँ शरीर है पताके का दंड, पताके का वस्त्र है मन। यह मन इस प्रकार पीछे भागता है जैसे अपना हो ही न, पूर्ण अपरिचित हो।

सुरयुवती – मेनका – से उत्पन्न और परित्यक्त वह शकुन्तला मुनि (कण्व) की सन्तान उसी तरह है जैसे अर्क (अकौड़ा, मदार) के कृश पर शिथिल होकर टपका हुआ चमेली का फूल। यहाँ उपमा का सौन्दर्य द्रष्टव्य है। शकुन्तला देखने में कितनी अधिक सुन्दर है। वह कण्व की सन्तान कैसे हो सकती है। वह है सुरयुवती – मेनका – की संतत्रि – चमेली के फूल जैसी। वह फूल पूर्ण विकसित होकर अर्कवृक्ष पर चू पड़ा हो। वैसे ही अकस्मात् वह कण्व को पड़ी मिल गई। अर्कवृक्ष देखने में बदसूरत – नेत्रों का शत्रु – होता है

'सुरयुवतिसंभवं किलमुनेरपत्यं तदुज्झिताधिगतम्।
अर्कस्योपरि शिथिलं च्युतमिव नवमालिकाकुसुमम्॥ [4]

कामपीड़िता शकुन्तला दुबली, पीली तथा शिथिल हाने पर भी वैसी ही

सुन्दर लगती है जैसे पत्तों को सुखा देने वाली वायु के द्वारा स्पर्श की गई वासन्ती लता।

'शोच्या च प्रियदर्शना च मदनक्लिष्टेयमालक्ष्यते।
पत्राणामिव शोषणेन मरुता स्पृष्टा लता माधवी॥ [5]

कण्व शिष्यों के बीच शकुन्तला की शोभा वैसी ही है जैसी पके – पीले नीरस पत्तों के बीच किसलय

'मध्ये तपोधनानां किसलयमिव पाण्डुपत्राणाम्। [6]

यहाँ पीतवल्कलधारी तपस्वी कण्व – शिष्यों को पाण्डुपत्र (पीले पत्ते) कहा गया है क्योंकि कण्व के शिष्य भी विलास से सर्वथा दूर अतः नीरस हैं और शकुन्तला है किसलय के समान कोमल, नवीन एवं चित्ताकर्षक। पीले पत्तों के बीच किसलय का अङ्कुरित होना स्वाभाविक ही है।

दुर्वासा के शाप के कारण दुष्यन्त शकुन्तला को न पहचान सका। अनायास उपस्थित अति सुन्दरी शकुन्तला को देखकर वह दुविधा में पड़ गया – शकुन्तला मेरी पत्नी है या नहीं ? ऐसी दुविधा की स्थिति में मैं न तो उसका उपभोग ही कर पा रहा हूँ (क्योंकि हो सकता है वह दूसरे की पत्नी हो) और न परित्याग ही (क्योंकि वह अति – सुन्दर है और हो सकता है कि वह अपनी ही पत्नी हो) –उस भ्रमर के समान जो प्रभातकाल में ओस में सराबोर कुन्द के फूल का न तो उपभोग ही कर सकता है क्योंकि ओस में सन जाने का भय है और न उसे छोड़ ही सकता है क्योंकि कुन्द के पुष्प के प्रति उसका सहज आकर्षण जो है।

'इदमुपनतमेवं रूपमक्लिष्टकान्ति
प्रथमपरिगृहीतं स्यान्नवेत्यव्यवस्यन्।
भ्रमर इव विभाते कुन्दमन्तस्तुषारं
न खलु परिभोक्तुं नैव शक्नोमि हातुम्॥ [7]

शास्त्रीय सिद्धान्त है कि स्मृति सदा श्रुति के अर्थ का अनुगमन करती है। इस सिद्धान्त का उपयोग कालिदास ने एक उपमा में किया है। राजा दिलीप की पत्नी सुदक्षिणा ' नन्दिनी ' नामक गाय के मार्ग पर वैसे ही पीछे – पीछे चली जैसे स्मृति श्रुति के अर्थ के पीछे चलती है (अनुगमन करती है)–

मार्ग मनुष्येश्वरधर्मपत्नी श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्॥ [8]

एक दार्शनिक उपमा के भी दर्शन कीजिए। यथार्थ वक्ता कहते हैं कि ब्रह्मसरोवर से सरयू वैसे ही आविर्भूत हुई है जैसे मूलप्रकृति से बुद्धि तत्त्व–

ब्राह्मं सरः कारणमात्मवाचो बुद्धेरिवाव्यक्तमुदाहरन्ति। [9]

शकुन्तला का विवाह दुष्यन्त के साथ हो गया अतः कण्व निश्चिन्त हो गये क्योंकि शकुन्तला के साथ सद्व्यवहार होगा, उसे किसी प्रकार के अनुचित कष्ट की संभावना दुष्यन्त की ओर से नहीं रही। कण्व कहते हैं कि अच्छे शिष्य को दी गई विद्या के समान तुम्हारे विषय में कोई चिन्ता नहीं करनी है–

वत्से ! सुशिष्यपरिदत्ता विद्येवाशोचनीया संवृत्ता। [10]

संदर्भ–संकेत :

1. रघुवंशम्– 6.67
2. पूर्वमेघः–
3. अभिज्ञानशाकुन्तलम्– 1.31
4. अभिज्ञानशाकुन्तलम्–2.8
5. अभिज्ञानशाकुन्तलम्–3.8

6. अभिज्ञानशाकुन्तलम्–5.13
7. अभिज्ञानशाकुन्तलम्– 5.19
8. रघुवंशम्– 2.2
9. रघुवंशम्– 13.60
10. अभिज्ञानशाकुन्तलम्–4